

## What is Arya Samaj?

Arya Samaj is an institution founded by Maharishi Dayanand Saraswati based on the universal teachings of the Vedas. It is an organisation propagating universal message of the Vedas for the benefit of the entire humanity.

# ARYAN VOICE

YEAR 37

17/2015-16

MONTHLY

November 2015

**Tickets on Sale Now.....**

**Charity Dinner**

**An evening of Bollywood nite with Mr Hitesh and Mrs**

**Rama Jobanputra and Live Band**

**Saturday 7th November 2015**

**6.30pm.**

**At**

**Arya Samaj West Midlands.**

**This will be a ticketed event in order to raise funds for our Arya Samaj. (Please see page 19 for detailed information)**

**TEL: 0121 359 7727 E-mail- enquiries@arya-samaj.org**

ARYA SAMAJ (Vedic Mission) WEST MIDLANDS  
(Charity Registration No. 1156785)

188 INKERMAN STREET (OFF ERSKINE STREET), NECHELLS,  
BIRMINGHAM B7 4SA

Website: [www.arya-samaj.org](http://www.arya-samaj.org)

## **CONTENTS**

<b>10 Principles of Arya Samaj</b>	<b>3</b>
<b>Liberate Yourself from Jealousy</b>	<b>by Krishan Chopra 4</b>
<b>१३ वाँ विवाह सँस्कार</b>	<b>आचार्य डॉ. उमेश यादव 6</b>
<b>Interfaith talk-session on 20th Sep.2015</b>	<b>12</b>
<b>D.A.V Primary Free School</b>	<b>13</b>
<b>Gandhi Jaynti, 2 October 2015</b>	<b>14</b>
<b>Celebration of Independence Day of India</b>	<b>17</b>
<b>Charity Dinner &amp; Dance</b>	<b>19</b>
<b>News (पारिवारिक समाचार)</b>	<b>20</b>
<b>Happy Diwali</b>	<b>23</b>

**For General and Matrimonial Enquiries  
Please Ring  
Miss Raji (Rajashree) Chauhan (Office Manager)  
Monday: - 1pm-5pm  
Tuesday to Friday between: - 2.30pm to 6.30pm,  
Wednesday: - 11.00am to 1.00pm.  
Bank Holidays – Closed - Tel. 0121 359 7727  
E-mail- enquiries@arya-samaj.org**

## **10 Principles of Arya Samaj**

- 1. God is the primary source of all true knowledge and all that is known by its means.(At the beginning of creation, nearly 2 Billion years ago, God gave the knowledge of 4 Vedas to four learned Rishis named Agni, Vayu, Aditya and Angira. Four Vedas called Rigved, Yajurved, Samved and Atharva Ved contain all true knowledge,spiritual and scientific, known to the world.)**
- 2. God is existent, intelligent and blissful. He is formless, omnipotent, just, merciful, unborn, infinite, invariable (unchangeable), having no beginning, matchless (unparalleled), the support of all, the master of all, omnipresent, omniscient, ever young (imperishable), immortal, fearless, eternal, holy and creator of universe. To him alone worship is due.**
- 3. Vedas are the scripture of all true knowledge. It is paramount duty of all Aryan to read them, teach and recite them to others.**
- 4. All human beings should always be ready to accept the truth and give up untruth.**
- 5. All our actions should be according to the principles of Dharma i.e. after differentiating right from wrong.**
- 6. The primary aim of Arya Samaj is to do good to the human beings of whole world i.e. to its physical, spiritual and social welfare.**
- 7. All human beings ought to be treated with love, justice and according to their merits as dictated by Dharma.**
- 8. We should all promote knowledge (Vidya) and dispel ignorance (Avidya).**
- 9. One should not be content with one's own welfare alone but should look for one's welfare in the welfare of all others.**
- 10. In matters which affect the well being of all people an individual should subordinate any personal rights that are in conflict with the wishes of the majority. In matters that affect him/her alone he/she is free to exercise his/her human rights.**

# **Liberate Yourself from Jealousy**

**Ado yat te hridi shritam manaskam patayishnukam I  
Tatasta irshya munchaami nirushmaanam driteriva II**

**Athrva Veda 6.18.3**

## **Meaning in Text Order**

**Adah = this**

**Yat = whatever**

**Te = your**

**Hridi = in your mind**

**Shritam = established**

**Manaskam = fluttering mind**

**Patayishnukam = leading towards downfall**

**Tatah = from which**

**Te = your**

**Irshyaam = jealousy**

**Munchaami = relinquished**

**Nirushmaanam = releases the hot air**

**Drite = bellow**

**Iva = like.**

## **Meaning**

The thought which shelters in my mind, is on low mindedness which hovers therein, I will drive away jealousy from my mind just as one releases hot air from the bellows.

## Contemplation

Jealousy is an element of the mind which is the product of narrow mindedness. It is not practical to believe that every person will reach the same height in life. Every individual's effort is different. The capability of intellect is not the same and the circumstances of some are not favourable. Therefore some people are going to be ahead of others.

Now it depends on the flow of thoughts of our mind which way it turns. Elevation in human life is of four kinds i.e political, spiritual, educational and financial. When we see the rise of a person there are two types of reaction in our mind. One is positive and the other is negative. The positive is called a divine tendency and the negative is called a demon tendency.

Some take pleasure in the prosperity and rise of others. When they see that someone has achieved heights in the spiritual field. They think such people make the world more peaceful and they will raise the moral standard of the society, and the entire society will reap the benefit of their achievements.

When they see someone is honoured for his contribution to society, they feel delighted that it will stimulate others and they will enthusiastically engage in contributing to society. This type of flow of thought is called divine spirit. To cultivate the feeling of delight in the success and prosperity of others is a divine spirit.

On the contrary some will feel jealous when see others prosperous and successful. Jealousy means they do not tolerate the success, rise, prosperity or victory of others. Such people torture themselves for their own mentality. They suffer due to their narrow mindedness and this type of tendency leads to their downfall. Jealousy is a fire and it burns those who foster it. Therefore get rid of this fire of jealousy.

## १३ वाँ विवाह सँस्कार

आचार्य डॉ. उमेश यादव

यह विवाह सर्वाधिक प्रसिद्ध है क्योंकि यह सँस्कार सभी गृहस्थ बनने वालों के लिये किसी न किसी रूप से अनिवार्यतः सम्पन्न करवाया जाता है । इसे गरीब-अमीर सभी बहुत ही उत्साहपूर्वक अपनी-अपनी सामर्थ्य के अनुसार मनाते हैं । वि-वाह= वि- विशेषता से वाह- वहन करना । गृहस्थ की जिम्मेवारियों को वाखूबी निभाने का व्रत-संकल्प है -विवाह । इस सँस्कार के माध्यम से होने वाले पति-पत्नी अपनी-अपनी जिम्मेवारियों को भलि-भाँति निभाने की प्रतिज्ञा करते हैं । महर्षि दयानन्द ने विवाह हेतु परस्पर तुल्य गुण-कर्म-स्वभाव का होना महत्त्वपूर्ण बताया है । श्रेष्ठ संतान की ईच्छा से जब मुख्य ध्येय बनाते हैं और फिर प्रीतिपूर्वक गृहस्थ धर्म के अनुसार एक विचार हो संसार में उत्तम कर्म करने के लिये स्त्री-पुरुष परस्पर विधिवत् सम्बन्ध बनाते हैं तब वह विवाह कहलाता है ।

विवाह में आयु-विचार- इस वारे में हम गर्भाधान सँस्कार में विस्तार से वर्णन कर आये हैं । बाल-विवाह और किशोर विवाह तो वैदिक धर्म में वा कानूनन भी सर्वथा वर्जित है । युवा विवाह ही स्वीकार्य है । इसके लिये वैदिक धर्मानुसार न्यूनतम आयु पुरुष की २५ वर्ष और कन्या की १६ वर्ष मान्य है । यह बर-कन्या की शारीरिक संरचना व परिपक्वता के अनुसार आयुर्वेद आदि स्वास्थ्य-विचार मूलक ग्रन्थों के आधार पर बताया गया है । कानूनन कन्या न्यूनतम १८ वर्ष और वर २१ वर्ष का होना मान्य है । शारीरिक विकास की दृष्टि से शास्त्रीय प्रमाणों के आधार पर पुरुष ४८ वर्ष और कन्या २४ वर्ष का अधिकतम होना बताया गया जबकि वैधानिक दृष्टि

से कन्या १८ वर्ष और वर २१ वर्ष के वाद कोई किसी भी उम्र का हो ; परस्पर विवाह करने में कोई अड़चन नहीं है पर वैदिक ग्रन्थों के अनुसार यह स्पष्ट किया गया है कि कन्या वर की उम्र से कम उम्र की हो । यह गृहस्थ-अनुभव-सुख को ध्यान में रखकर कहा गया है । विस्तार ज्ञान के लिये आयुर्वेद, चरक और सुश्रुत जैसे स्वास्थ्य-औषधि-चिकित्सा मूलक ग्रन्थ पढ़ें ।

विवाह में लग्न-विचार- महर्षि दयानन्द ने विवाह काल में लग्न के लिये विवाह-मुहूर्त-काल, नक्षत्र- आदि विचार सर्वथा कल्पनायुक्त अवैदिक बताया है । महर्षि दयानन्द कृत सँस्कार विधि में उद्धृत आशलायन १/४/१-२ तथा गोभिल्य गृहसूत्रों २/१/१-२ का प्रमाण देख सकते हैं ।

विवाह-प्रकार- मनुस्मृति के आधार पर महर्षि दयानन्द ने उल्लेख किया है कि विवाह आठ प्रकार का माना गया जिसमें प्रथम के चार उत्तम हैं और बाद के चार उत्तरोत्तर कम अच्छा हैं । इनके नाम हैं- ब्राह्म , देव, आर्ष, प्राजापत्य प्रथम के चार एवं आसुर, गान्धर्व, राक्षस, और पैशाच ये बाद के चार । पूर्व के चार सँस्कार युक्त यज्ञ विधि से सम्पन्न किये जाते हैं और बाद के चार विवाह-प्रकारों में सँस्कारात्मक यज्ञ-विधा नहीं है, सम्भवतः इसी कारण बाद के इन चारों प्रकारों को कम अच्छा बताया गया है । यह भी सम्भव है कि आधुनिक काल में विवाह की कुछ ऐसी विधायें पायी जाती हैं जिनमें यज्ञ का समावेश नहीं है; यह इन्हीं प्रचलित चार विधाओं से ले लिया गया हो । उदाहरण के तौर पर हम पंजीकृत विवाह ( सिविल मैरेज/ रजिस्ट्री मैरेज ) की विधि । इनमें कुछ प्रतिजायें तो हैं पर सँस्कारात्मक यज्ञ-विधान नहीं हैं । धार्मिक साम्प्रदायिक भाव से बचने के

लिये या विधि में सरलता दिखाने के लिये भी ऐसा किया जाना सम्भावित है । समयानुसार इन विधियों में परिवर्तन आता रहना भी सम्भव है, इस कारण ही यज्ञ विधि को स्मार्त-विधा कहा गया है । स्मार्त का अर्थ परिवर्तन ही होता है । समाज में कुछ धार्मिक हैं, कुछ नास्तिक हैं, कुछ बाह्य सभ्यता तो कुछ जंगली सभ्यता से प्रभावित लोग होते हैं जो सदियों से चले आ रहे हैं । कदाचित् सँस्कारों पर भी इसका प्रभाव पड़ता रहा है । फिर भी मानव मूल्यों को सही ढंग से उभारने में यज्ञ-विधा सर्वोत्तम सिद्ध है । वैदिक धर्म /आर्य सँस्कृति / महर्षि दयानन्द सरस्वती का विचार सर्वथा आर्ष अर्थात् ऋषि-परम्परा के अनुरूप है । मानव जीवन को श्रेष्ठ बनाने में अनुकूल है । हमें इसका मान करना उचित है ।

विवाह-सम्बन्ध में विशेष विचार- सगोत्र तथा निकट का विवाह अनुचित बताया गया । चचेरे, ममेरे, फुफेरे, मौसरे जैसे भाई-बहनों में या ऐसे ही निकट के सम्बन्धों में विवाह करना निम्नलिखित कारणों से अनुचित है । निकट सम्बन्ध या स्थान होने पर प्रायः एक-दूसरे के गुण-दोष को निकट से जानते हैं फलतः एक-दूसरे के साथ उचित मर्यादा का पालन नहीं कर पाते । परस्पर प्यार की कमी रहती है । आवश्यक पति-पत्नी की मर्यादित दूरी का महत्त्व नहीं समझने के कारण आपसी कलह अधिक रहती है । आपसी प्रेम में भी कमी आ जाती है । कहावत है कि परोक्ष पदार्थ में जितनी प्रीति रहती है, उतनी प्रत्यक्ष में नहीं । निकट सम्बन्ध से स्त्री-पुरुष के पारम्परिक शारीरिक रोग (जेनेटिक डिजीज) बढ़ते हैं । संतान भी कम वृद्धिमान् और कम स्वस्थ होती है । इस प्रकार निकट के सम्बन्ध में कलह, अप्रीति, अवनति तथा निर्धनता की अवस्था उभरने की सम्भावना बनी रहती है । अतः हमें सगोत्र विवाह और निकट का विवाह



से बचना चाहिये । यथासम्भव दूरस्थानीय विवाह को महत्त्व देना उचित है । इसमें पति-पत्नी के बीच माता-पिता का टोक-टोकाव भी कम हो जाता है । बहुत सारे झगड़े तो बड़ों के टोक-टोकाव से ही जुड़े पाये जाते हैं । बड़ों का टोक-टोकाव न हो तो वे स्वयं अपने झगड़े कुछ कट् टे-मिट् ठे अनुभवों के आधार पर निबट कर गृहस्थ प्यार को बढ़ा लेते हैं । इससे उनका जीवन स्वयं ही सधता रहता है और परस्पर प्यार बना रहता है जो उनका प्रीति, उन्नति तथा ऐश्वर्य का मजबूत आधार बनता है । निरुक्त 3/8 का यह उदाहरण उपयुक्त है- “ दुहिता दुर्हिता दूरे हिता भवतीति वा ” अर्थात् कन्या का विवाह जितना दूर होवे ; उसके लिये उतना ही लाभप्रद है । इसके साथ यह भी ध्यान देना योग्य है कि उनके गुण-कर्म-स्वाभाव की परीक्षा जन्मना नहीं अपितु कर्मणा हो जिसमें वर-कन्या को पूरा अधिकार है कि वे एक-दूसरे की परीक्षा विना किसी झिझक के करें । किसी के दवाब में कभी न करें । दोनों की स्वेच्छा आवश्यक है । ध्यान रहे कि ब्राह्मण-कुलोत्पन्न चरित्र भ्रष्ट होकर गिर सकता है और शूद्र का वच्चा भी चरित्र से श्रेष्ठ बनकर ब्राह्मण बन सकता है या इसी प्रकार कोई अन्य वर्ण धर्म को प्राप्त हो सकता है । मनुस्मृति का यह प्रमाण हमें यही स्पष्ट कर रहा है । देखें-

“ शूद्रो ब्राह्मणतामेति ब्राह्मणश्चैति शूद्रताम् । क्षत्रियाज्जातमेवन्तु विद्याद्वैश्यात्तथैव च ” । अतः महर्षि दयानन्द ने स्पष्ट कहा कि अगर किसी व्यक्ति में ब्राह्मण का गुण है तो उसे ब्राह्मण का स्थान मानव समाज में मिलना चाहिये चाहे वह शूद्रकुलोत्पन्न ही क्यों न हो और वैसे ही शूद्र का गुण है तो उसे शूद्र का स्थान मिले चाहे वह ब्राह्मण कुलोत्पन्न ही क्यों न हो । इसे ही हम जन्मना नहीं बल्कि कर्मणा

मानना कहेंगे । तभी गुण-कर्म-स्वभाव को उचित स्थान मिल सकेगा ।

ब्राह्मण-पहचान- महाभारत का यह प्रमाण देखें-

१. सत्यं दानमथाद्रोह आनृशंस्यं त्रपा घृणा । तपश्च दृश्यते यत्र स  
ब्राह्मण इति स्मृतः ॥

२. शूद्रे चैतद् भवेल्लक्ष्यं द्विजे तच्च विद्यते । न वै शूद्रो भवेच्छूद्रो  
ब्राह्मणो न च ब्राह्मणः ॥ महाभारत-शा. १८८.४.८

अर्थ- जिसमें सत्य, दान, अद्रोह, अक्रूरता, लज्जा, दया और तप दिखे, वह ब्राह्मण है । यदि ये गुण शूद्र में दिखाई दे और ब्राह्मण में नहीं तो शूद्र ही ब्राह्मण है और ब्राह्मण शूद्र है । अर्थात् गुण-कर्म-स्वभाव की प्रधानता से जो वर्ण-व्यवस्था आर्ष ग्रन्थों में है वही महर्षि दयानन्द को भी स्वीकार्य है । अतः विवाह प्रकरण में यह तो देखें कि ब्राह्मण-ब्राह्मणी, क्षत्रिय-क्षत्रिया, वैश्य-वैश्या/वैश्यधर्मिणी और शूद्र-शूद्रा का विवाह समुचित जाने पर यह सब गुण-कर्म-स्वभाव से मान्य है न कि कुल-जन्म से । इसमें आश्वलायन गृह-सूत्र १/५/५ का प्रमाण भी सहायक है । देखें- सं.वि. स्वामी दयानन्द सरस्वती ।

विवाह-तिथि में विचार- जिस दिन दोनों का मन प्रसन्न हो और विवाह करने की प्रबल ईच्छा बन रही हो उस दिन ही करें । इसमें बहुत ही सटीक प्रमाण मिलता है कि जब कन्या रजस्वला होकर शुद्ध हो जाये तब उसी दिन या उसके तीन रात्री छोड़कर विवाह तिथि निर्धारित किया जाये । यह इस लिये कि विवाहोपरान्त गर्भाधान करने में सर्वथा अनुकूलता हो । इसी

कारण उत्तर-विधि में यह कहा गया है कि विवाह के बाद तीन रात्री कम से कम दोनों प्रीतिपूर्वक मर्यादित रहकर ब्रह्मचर्य का पालन करें । तब

गर्भाधान सँस्कार को विधिपूर्वक सम्पन्न करें । आम भाषा में इसे लोकाचार विधि के अन्तरगत चौठारी कहा जाता है । यह चौठारी कुछ और नहीं अपितु गर्भाधान सँस्कार करने की ही एक विधिवत् प्रक्रिया है । प्रायः यह देखा जाता है कि विवाह के बाद चौथे दिन लोग अपने घर पर यज्ञ, पूजा, कथा आदि आयोजन रखते हैं । वस्तुतः यह गर्भाधान सँस्कार का ही विकृतरूप है । हमें इस दिन विधिवत् गर्भाधान सँस्कार को ही सम्पन्न करना चाहिये फिर पति-पत्नी अपना मर्यादित गृहस्थ आरम्भ करें । विवाह-विधि की चर्चा अगले अंक में करेंगे ।



## **Interfaith talk-session on 20th Sep.2015**

**After havan, there was a good interactive session of multifaith talks in our Arya Samaj Bhavan.**

**Acharya Umesh Yadav, our resident priest arranged a talk-session by several faith based speakers.**

**First of all, Dr. Narendra Kumar , the Chair person of Arya Samaj WM, Board of Trust welcomed all invited speakers; Mr. Shekh Amin, Mrs. Hena Ray, Miss. Nasrin, Mr. Luke who were present from Islamic Religion , Mr. Rechard , Minister of Christianity and also Dr. Arvind Sharma, speaker from Vedic/ Hindu religion.**

**Dr. Kumar shared his views on Arya samaj's ten principals and its objectives.**

**All the invited speakers shared their explicit views, ideas and interpretation on 'love, hope not hatred'. The shared ideas were derivatives of their belief and faith which also mentioned about peace and humanity. It was a very impressive and successful meeting. This session was conducted by Acharya Dr. Umesh Yadav. He gave message as "hatred cant' be removed by hatred, it has to be rooted out by love."**

**The congregation was followed by Vedic Arti, Shanti-path, Jay-ghosh and Priti-bhoj (Vegetarian Lunch). Everyone very willingly took part in all the activities.**

## **D.A.V PRIMARY FREE SCHOOL**

It gives me great pleasure to inform you all that we have found a head teacher to join our team of members working on this project. She has already started working with us.

We are still looking for a qualified Solicitor/Lawyer to join our team.

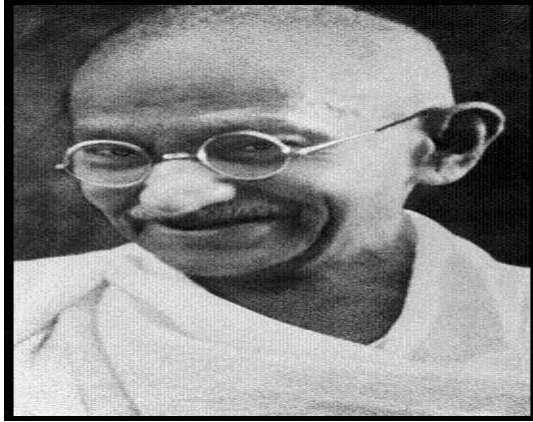
We had a very fruitful and positive meeting with members of Education department of Birmingham City Council this month.

They are preparing a document on places which will be available in the city of Birmingham in future. They will publish this document in November 2015.

Education department will call us for second meeting in December 2015.

In the meantime we are working closely with New School Network charity as advised by the Department for Education, London to progress our application.

We will keep you informed as and when necessary.



### **GANDHI JAYANTI, 2 OCTOBER, 2015**

Gandhi Jayanti is a national event celebrated every year to pay tribute to the Father of the Nation, Mahatma Gandhi. This day is also celebrated as the International Day of Non-Violence all over the world. Gandhi Jayanti has been declared as International Day of Non-Violence by the United Nations General Assembly on 15<sup>th</sup> of June 2007. Gandhi Jayanti is observed as a national holiday all through the country in order to commemorate the birth anniversary of Mohandas Karamchand Gandhi (born on 2<sup>nd</sup> of October in 1869). His non-violence movement for independence of India is still continues influencing political leaders and youths of our own country as well as other countries worldwide.

The aim of celebrating Gandhi Jayanti as the International Day of non-violence is to distribute Bapu's philosophy, believe in non-violence, principle, etc all over the world. It is celebrated through

theme based proper activities in order to enhance the public awareness worldwide. Gandhi Jayanti celebration involves commemorating Mahatma Gandhi's life and his contributions in India's Independence. He was born in a small coastal town (Porbandar, Gujarat) however he performed great works all through his life which still influences the people in advance era.

He worked great for achieving Sawaraj, remove untouchability from society, abolition of other social evils, improving economic condition of farmers, empowering women rights and many more. The movements run by him are non-cooperation movement in 1920, Dandi March or Salt Satyagraha in 1930 and Quit India Movement in 1942 in order to help Indian people in getting freedom from British rule. His Quit India Movement was a call to British to leave India. Gandhi Jayanti is celebrated in various innovative ways by the students, teachers, government officials, etc all over the country. It is celebrated at Raj Ghat, New Delhi by offering flowers on Gandhi's statues, singing his favorite devotional song "Raghupati Raghava Raja Ram" and other ceremonial activities by the government officials.

It is one of the three National Holidays of the country (other two are Independence Day and Republic Day) celebrated every year in the schools, colleges, educational institutions, government and non-government organizations, etc. Schools, colleges, government offices, post offices, banks, etc remain closed on Gandhi Jayanti in

order to pay tribute to the great leader of India. We remember Bapu and his great deeds by celebrating the Gandhi Jayanti. Students are assigned for various tasks to perform at this day such as poem or speech recitation, drama play, essay writing, slogan writing, group discussion, etc based on the life and works of Mahatma Gandhi.

### **Some Famous Quotes of Bapu (Mahatma Gandhi)**

- “Whenever you are confronted with an opponent. Conquer him with love.”
- “Ahimsa means not to injure any creature by thought, word or deed, not even to the supposed advantage of this creature.”
- “Where there is love there is life.”
- “I claim no perfection for myself. But I do claim to be a passionate seeker after Truth, which is but another name for God.”
- “I have nothing new to teach the world. Truth and non-violence are as old as the hills. All I have done is to try experiments in both on as vast a scale as I could.”
- “The weak can never forgive. Forgiveness is the attribute of the strong.”
- “You must be the change you wish to see in the world.”
- “Happiness is when what you think, what you say, and what you do are in harmony.”
- “An eye for an eye only ends up making the whole world blind.”
- “Poverty is but the worst form of violence.”
- “Live as if you were to die tomorrow. Learn as if you were to live forever.”



## **Celebration of Independence Day of India**

**On 16th August 2015 we celebrated Independence Day of India in Arya Samaj West Midlands Bhavan. Honourable Shri Jitendra Kumar Sharma, Consul General of India, was our chief guest.**

**Mr. Shailesh Joshi, a trustee of our Arya Samaj, was the Compere of this function. More than 150 people attended this function.**

**Indian National flag was hoisted by our Patron Mr. Gopal Chandra MBE. This was followed by singing of Indian national anthem by all present.**

**Dr. Narendra Kumar, Chairman of the Board of Trustees, welcomed and congratulated the guests and audiences. He told the audience that Maharishi Swami Dayanand Saraswati, the founder of Arya Samaj, was the first person to use the word "Swaraj" self rule in his famous book. Satyarth Prakash. Maharishi Swami Dayanand Saraswati should be called grandfather of India. Dr. Kumar also told the audience about the first principle of Arya Samaj "God is the primary source of all true knowledge and all that is known by its means." This true knowledge is written in four Vedas. But our Western and Indian societies have been ignoring this knowledge. He told the audience that it is prime duty of Arya Samaj to propagate the knowledge of Vedas to the world.**

**The students of Dr. Jessica performed two Indian classical dances based on patriotic songs. Their performance was well appreciated by the audience.**

**Mrs. Swaran Talwar recited a patriotic poetry.**

**Honourable Consul General of India Shri Jitendra Kumar Sharma told the audience about the messages from President and Prime Minister of India and the progress India is making. A dignitary from India Acharya Anand Purusharthi recited a mantra and explained to the audience about importance of giving respect to elders, giving hug and love to friends and affectionate love to children in the community. He also presented some religious books to Consul General of India.**

**Our valued life member Mrs. Nirmal Devi Prinja sang a patriotic song.**

**Acharya Umesh Yadav spoke about the importance of a nation as written in Vedas. He also recited a melodious poetry.**

**In the end Dr. Arvind Sharma thanked Consul General of India, other dignitaries, the participants and the audience for making this function a success. He also thanked Mr. Shailesh Joshi for presenting the whole programme in a very efficient and organised way.**

**The Rishi Langer for the day was sponsored by our valued life member Mr. Joginder Pal Sethi.**

**The function concluded by singing Arti and reciting Shanti path.**



# **Charity Dinner**

## ***Bollywood Nite!***

**Saturday 7th November 2015**

**Doors open 6.30pm – Till Late**

**At**

**Arya Samaj (Vedic Mission) West Midlands  
188 Inkerman Street (off Erskine Street), Nechells,  
Birmingham, B7 4sa**

**Tickets £20 per person**

**3 Course Vegetarian Meal**

**Come enjoy the evening with singers Mr Hitesh and  
Mrs Rama Jobanputra and Live Band**

**For more information and to buy tickets please call**

**TEL: 0121 359 7727**

**Or**

**E-mail- [enquiries@arya-samaj.org](mailto:enquiries@arya-samaj.org)**

**A show NOT to be MISSED.....**

## News

### Condolence:

- Mr. Ashwini Vaid and family for the loss of his brother in law (Bahnoi) Mr. Chandresh Datt Sandhir (age 81) Birmingham. May God grant eternal peace to the departed soul & give strength to every member of this family & relatives to bear the time of sorrow.

### Congratulations:

- Mr. Rajinder and Mrs. Sunita Tandy for the marriage of their son Rajiv to Vicky d/o Mr. Naranjan and Mrs. Krishna Sondhi.
- Mr. Alok Yadav for Grih-pravesh havan at Cardiff.
- Drs. Arun & Mrs Parveen Bahal for being blessed with a baby named Rishi, Grandson of Mr. Varinder and Mrs. Santosh Bahal on 1<sup>st</sup> Oct. 2015
- Dr. M.L. Seth and family for performance of hair cutting ceremony (Mundan Sanskaar) for his grandson Aarin s/o Mr. Navin and Shruti Seth in Arya Samaj WM on 11<sup>th</sup> Oct.2015.

**Arya Samaj West Midlands would like to thank all  
Yajmans and sponsors for Sunday vedic Sermon and  
Rishi Langar.**

- Mrs. Ved Datta for performing havan in merory of her late husband Mr. Harikrishan Datta on 27<sup>th</sup> Sep. 2015.
- Mrs. Baishakhisen Gupt for performing havan for happiness, prosperities, good education and health for her son Nishan on 18<sup>th</sup> October 2015.

## **Donations to Arya Samaj West Midlands**

- Mr. Krishan Chopra for Ved katha food & Gayatree Mahayajna £70+50 = £120
- Mr. J.G. Bector £21
- Mr. Rajiv Datta £24
- Mr. Sanjeev Mahandru for Ved katha food £40
- Mr. S.P. Datta £11
- V.N. & Britannic warehouse for sponsor for prizes in charity dinner of 7<sup>th</sup> Nov.2015 in Arya Samaj £251
- Mr. M.L. Seth £51
- Mr. M.L. Seth & family for Rishi Langar £275.50
- Mr. S.K. Thukral for donation to Charity Dinner £50
- Mrs. Baishakhi sen Gupt for R.L + Donation £171

## **Donations to Arya Samaj through Priest Services.**

- Mr. Rajinder Tandy £400
- Mrs. Nirja Dandona £50
- Mr. Alok Yadav £51

**Thank you for all your Donations**

**Please contact Acharya Dr Umeh Yadav on  
0121 359 7727  
for more information on**

- **Member or non member wishing to be a Yajman in the Sunday congregation to celebrate an occasion or to remember a departed dear one.**
- **Have Havan, sankars, naming, munden, weddings and Ved Path etc performed at home.**
- **Our premises are licensed for the civil marriage ceremony.**
- **Please join in the Social group at Arya Samaj West Midlands every Wednesday from 11am. Emphasis is on keeping healthy and fit with yoga and Pranayam. Hot vegetarian Lunch is provided at 1pm.**
- **Ved Prachar by our learned Priest Dr Umesh Yadav on Radio XL 7 to 8 am, first Sunday of the month. Next 1st November 2015 & 6th December 2015**

**Every effort has been taken that information given is correct and complete. But if any mistake is spotted please inform the office.**

*0121 359 7727*

E-mail- [enquiries@arya-samaj.org](mailto:enquiries@arya-samaj.org)

Website: [www.arya-samaj.org](http://www.arya-samaj.org)

# Diwali

HAPPY

**Dear Arya Samaj West Midlands Members  
And  
Friends**

**On this auspicious festival of lights, May the  
glow of joy, prosperity, and happiness  
illuminate your life and and your home.**

**Wishing everyone a Happy Diwali and a  
Prosperous New Year!**

